http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2026) वर्ष 6, अंक 8, 42-44

Article ID:642

घोड़े, गधे और खच्चर में ग्लैंडर्स: पहचान, बचाव और सावधानियाँ

डॉ. निर्भय भावसार[1]
डॉ. भूपेंद्र पांचाल[2]

[1]एम.वी. एससी. –प्रसार शिक्षा विभाग, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, बरेली
[2]एम.वी. एससी- पशु शल्य चिकित्सा एवं रेडियोलॉजी विभाग,पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय, महू

*अनुरूपी लेखक

डॉ. निर्भय भावसार*

घोड़े, गधे और खच्चर मनुष्य के साथ लंबे समय से जुड़े हुए उपयोगी अश्ववंशीय पशु हैं। परिवहन, कृषि कार्य, सैन्य सेवाओं, खेल, पर्यटन और विभिन्न प्रकार के श्रम कार्यों में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन पशुओं को प्रभावित करने वाली कई संक्रामक बीमारियों में ग्लैंडर्स (Glanders) विशेष महत्व रखता है। इसका महत्व केवल इसलिए नहीं है कि यह अश्ववंशीय पशुओं में गंभीर बीमारी उत्पन्न कर सकता है, बल्कि इसलिए भी है कि यह जूनोटिक रोग है और संक्रमित पशु से मनुष्य तक भी पहुंच सकता है।

ग्लैंडर्स क्या है?- ग्लैंडर्स एक गंभीर संक्रामक जीवाणुजनित रोग है, जिसका कारण Burkholderia mallei नामक जीवाणु है। यह रोग मुख्य रूप से घोड़े, गधे और खच्चर को प्रभावित करता है। इन तीनों पशुओं में रोग की तीव्रता और उसके लक्षण अलग-अलग हो सकते हैं। विशेष रूप से गधों और खच्चरों में रोग तीव्र रूप ले सकता है, जबकि घोड़ों में यह तीव्र, दीर्घकालिक या कभी-कभी कम स्पष्ट लक्षणों के साथ भी दिखाई दे सकता है। ग्लैंडर्स की एक महत्वपूर्ण विशेषता इसका जूनोटिक स्वरूप है। अर्थात संक्रमित पशु के संपर्क में आने वाले मनुष्यों में भी संक्रमण का खतरा रहता है।

इसलिए यह बीमारी पशु स्वास्थ्य के साथ-साथ सार्वजनिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

संक्रमण कैसे फैलता है?- ग्लैंडर्स का जीवाणु संक्रमित पशु के विभिन्न स्रावों में मौजूद हो सकता है। विशेष रूप से नाक से निकलने वाला स्राव, त्वचा के घावों से निकलने वाला द्रव और अन्य संक्रमित स्राव संक्रमण फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जब संक्रमित घोड़ा, गधा या खच्चर दूसरे पशुओं के निकट संपर्क में रहता है, तो संक्रमण फैलने की संभावना बढ़ जाती है। दूषित पानी, उपकरण, बर्तन, अस्तबल की सामग्री और अन्य संक्रमित वस्तुएँ भी संक्रमण के प्रसार में भूमिका निभा सकती हैं। इसलिए एक ही स्थान पर कई अश्ववंशीय पशुओं को रखने वाली जगहों पर विशेष सावधानी आवश्यक है।

घोड़े, गधे और खच्चर में दिखाई देने वाले लक्षण - ग्लैंडर्स के लक्षण हर पशु में एक जैसे नहीं होते। रोग की अवस्था और प्रभावित अंगों के आधार पर अलग-अलग संकेत दिखाई दे सकते हैं। सामान्य लक्षणों में बुखार, कमजोरी, भूख में कमी, शरीर की स्थिति में गिरावट और वजन कम होना शामिल हो सकते हैं।

नाक प्रभावित होने पर नासिका से चिपचिपा या मवादयुक्त स्राव निकल सकता है। नाक की अंदरूनी सतह पर गांठें, घाव या अल्सर दिखाई दे सकते हैं तथा आसपास के लिम्फ नोड्स में सूजन हो सकती है। यदि संक्रमण त्वचा को प्रभावित करता है तो त्वचा के नीचे गांठें, सूजन तथा बाद में घाव या अल्सर बन सकते हैं। कुछ पशुओं में पैरों में सूजन भी दिखाई दे सकती है।

फेफड़ों के प्रभावित होने पर खांसी, बुखार और सांस लेने में कठिनाई जैसे श्वसन संबंधी लक्षण देखे जा सकते हैं। गंभीर अवस्था में पशु की सामान्य कार्यक्षमता तेजी से प्रभावित हो सकती है। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि हर संक्रमित पशु में बीमारी के सभी लक्षण एक साथ दिखाई दें, यह आवश्यक नहीं है। कुछ मामलों में लक्षण कम स्पष्ट हो सकते हैं, जिससे रोग की समय पर पहचान चुनौतीपूर्ण हो जाती है।

रोकथाम में पशुपालक की भूमिका- ग्लैंडर्स जैसे संक्रामक रोग में बीमारी फैलने के बाद नियंत्रण करने की तुलना में समय पर रोकथाम और संदिग्ध पशु की पहचान अधिक महत्वपूर्ण होती है।

नए घोड़े, गधे या खच्चर को अन्य पशुओं के साथ रखने से पहले उसका स्वास्थ्य परीक्षण कराना चाहिए। नए पशु को कुछ समय तक अलग रखने की व्यवस्था करना भी उपयोगी है। यदि किसी पशु में नाक से असामान्य स्राव, त्वचा पर गांठ, लंबे समय से बने घाव, लगातार बुखार या सांस लेने में परेशानी दिखाई दे तो उसे तुरंत अन्य पशुओं से अलग कर देना चाहिए।

अस्तबल में साफ-सफाई बनाए रखना, पानी और चारे के बर्तनों की उचित स्वच्छता तथा उपकरणों की नियमित सफाई एवं संक्रमणरोधन आवश्यक है। अलग-अलग पशुओं के लिए इस्तेमाल होने वाले उपकरणों को बिना उचित सफाई के दूसरे पशु पर प्रयोग करने से बचना चाहिए।

मनुष्य में भी हो सकता है संक्रमण- ग्लैंडर्स की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक इसका मानव स्वास्थ्य से संबंध है। संक्रमित घोड़े, गधे या खच्चर के स्राव अथवा घावों के सीधे संपर्क में आने से मनुष्य में संक्रमण का खतरा हो सकता है।

मनुष्य में संक्रमण के दौरान बुखार, कमजोरी, त्वचा पर घाव, लिम्फ नोड्स में सूजन और श्वसन संबंधी समस्याएँ दिखाई दे सकती हैं। गंभीर स्थिति में रोग जीवन के लिए भी खतरा बन सकता है। इसलिए संक्रमित या संदिग्ध पशु के संपर्क में आने वाले व्यक्ति को स्वास्थ्य संबंधी असामान्य लक्षण दिखाई देने पर चिकित्सकीय सलाह लेनी चाहिए।

निष्कर्ष

ग्लैंडर्स घोड़े, गधे और खच्चर में होने वाला एक गंभीर संक्रामक रोग है, जिसका प्रभाव पशु स्वास्थ्य से आगे बढ़कर मानव स्वास्थ्य तक पहुंच सकता है। इस बीमारी के नियंत्रण में केवल पशु चिकित्सक की भूमिका ही नहीं, बल्कि पशु मालिक, अस्तबल कर्मचारी और पशुओं की देखभाल करने वाले प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी होती है।